घोषतरंग

शंख

स्वयंसेवक का नाम.....

शाखा.....केंद्र.....

जिला .....प्रांत.....

प्रकाशक :

साहित्य संगम
74, रंगराव मार्ग, शंकरपुरम्
बेंगळूरु - 560 004
✆: 080-26610081

प्रकाशन क्रमांक : 43

लोकार्पण

युगाब्द 5116, 31 मार्च सन् 2014 ई.

प्रथम संस्करण - 1983
द्वितीय संस्करण - 1991
तृतीय संस्करण - 1999
चतुर्थ संस्करण - 2004
पंचम् संस्करण - 2010
षष्ठम् संस्करण - 2014

मूल्यः- ₹ 35

केवल व्यक्तिगत उपयोग के लिये

मुद्रकः
राष्ट्रोत्थान मुद्रणालय
गविपुरं मार्ग, केंपेगौडानगर
बेंगळूरु - 560 019.
✆: 080-2661 2730

प्रस्तावना

''सङ्गच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।''

यह एक निर्विवाद सत्य है कि कदम से कदम मिलाकर-चलने और स्वर से स्वर मिलाकर बोलने से सबके मन मिलते हैं और इसी का द्योतक है उपर्युक्त वेदमन्त्र। इसलिए समग्र हिंदू समाज को संगठित करने के लिए बद्धपरिकर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यक्रमों में सांघिक व्यायाम, सांघिक संचलन और संघिक गायन को विशेष महत्व प्राप्त हो यह अत्यन्त स्वाभाविक है।

सांघिक व्यायाम एवं सांघिक संचलन के साथ तालबद्ध सुस्वर घोष भी हो तो सोने में सुहागे की बात हो जाती है और कार्यक्रमों में चार चाँद लग जाते हैं। किंतु इस दृष्टि से उपयोग में आ सकनेवाली किसी प्राङ्गणीय वादन की परम्परा प्राचीन काल में हमारे यहाँ थी या नहीं और थी तो उसका स्वरूप क्या था इस संबंध में अधिक कुछ ज्ञात नहीं हो पाया है। ऐसी स्थिति में घोष की पाश्चात्य पद्धति का अङ्गीकार करना क्रमप्राप्त था। किन्तु उसके भारतीयकरण की दिशा में हमारे अनेक बंधु सक्रिय हुए जिसके परिणामस्वरूप भारतीय रागों एवं तालों पर आधारित अनेक नवीन रचनाओं का निर्माण एवं प्रयोग अब तक हुआ है। उन्हीं रचनाओं का संकलन 'घोष-तरंग' नामक प्रस्तुत पुस्तिका में हुआ है।

संगीत को लिपिबद्ध करने की कुछ शैलियाँ भारत में प्रचलित हैं। इनमें भातखंडे की स्वरलिपि का प्रचलन सर्वाधिक है। घोष रचनाओं के लेखन हेतु कतिपय आवश्यक संशोधनों सहित उसी स्वरलिपि का प्रयोग इस पुस्तिका में हुआ है। स्वरलिपि सम्बन्धी विस्तृत जानकारी 'घोष परिचय' नामक पुस्तिका में दी गई है। रचनाओं की शुद्धता की ओर विशेष ध्यान दिया गया है। प्रस्तुत संकलन के उपयोग द्वारा सर्वत्र समरूपता स्थापित हो सकी तो इस पुस्तिका का प्रकाशन सार्थक माना जा सकेगा।

कुप्प. सी. सुदर्शन

v v v

मनोगत

'घोष तरंग' का छठा संस्करण आपके हाथों में सौंपते हुए हमें अतीव आनंद की अनुभूति हो रही है।

पुस्तक के प्रस्तुतिकरण में देश के अनेक बंधुओं ने अपार परिश्रम, सहयोग एवं मार्गदर्शन किया है एतदर्थ हम उनके आभारी हैं। राष्ट्रोत्थान मुद्रणालय, बेंगळूरु ने पुस्तक का सुंदर मुद्रण किया है इसलिए हम उनके भी आभारी हैं। आशा है कि विविध वाद्यों की रचनाओं का यह प्रस्तुतिकरण, शिक्षार्थियों के लिए उपादेय सिद्ध होगा। इसे और भी अधिक उपयुक्त बनाने हेतु आपके सुझावों का सदैव स्वागत है।

प्रकाशक

बेंगळूरु
षष्ठम् संस्करण
युगाब्द ५११६
३१ मार्च, सन् २०१४ ई.

शंख रचना

अंतरंग

प्रचलनगति

1. श्रीराम	1	10. दशमेश	6	19. रणजित	14	28. भास्कर	23
2. उदय	1	11. दीप	7	20. जगन्नाथ	15	29. नीलकंठ	24
3. सोनभद्र	2	12. तरंग	8	21. साकेत	16	30. निनाद	25
4. किरण	3	13. मंगला	9	22. यादव	17	31. त्रिहुत	26
5. गायत्री	3	14. विनायक	10	23. सुधीर	18	32. वसंत	27
6. मरुधर	4	15. श्रीनिवास	11	24. बजरंग	19	33. प्रताप	28
7. मेवाड़	4	16. परमार्थ	12	25. सागर	20	34. पाञ्चजन्य	29
8. चेतक	5	17. प्रतिध्वनि	12	26. वीरश्री	21		
9. अजेय	6	18. विक्रम	13	27. भरत	22		

मंदगति

1. कावेरी	30	3. वरदा	31	4. मलयप्रभा	31	5. दत्तात्रेय	32
2. निरंजन	30						

नैमित्तिकानि

1. स्वागतप्रणाम	33	5. सरसंघचालकप्रणाम	34	10. कार्यक्रम प्रारंभ	36	12. दीपनिर्वाण सूचना	38
2. ध्वजप्रणाम	33	6. प्रबोधन	35	11. परिवर्तन	36	13. दीपनिर्वाण	38
3. प्रत्युत्प्रचलनम्	33	7. संघोष	36	12. कार्यक्रम समाप्ति	36	14. संकट सूचना	39
4. आद्यसरसंघचालकप्रणाम	34	8. शारीरिक सूचना	36	10. भोजन सूचना	37	15. ध्वजावतरणम्	39
		9. बौद्धिक सूचना	36	11. जागरण	37		

स्वर लेखन

घोष रचनाओं का लेखन करने के लिए प्रयुक्त स्वरलिपि, उससे, संबंधित शब्दों की परिभाषा तथा अन्य संबंद्ध विषयों का संक्षिप्त परिचय यहाँ दिया गया है। 'घोष परिचय' पुस्तक से अधिक जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

स्वर: वाद्यों के वादन से निर्मित कंपित वायुमंडल के ध्वनितरंगों से नाद सुनाई देता है। ऐसे संगीतोपयोगी नादस्थानों को 'स्वर' कहते हैं।

वंशी : वंशी में **स री ग म प ध नि** इस क्रम से सात स्वर बजाए जाते हैं। प्रत्येक स्वर का एक नाम तथा निश्चित कंपन संख्या होती है। री ग ध नि यह चार स्वर अपनी निश्चित क्षमता से कम कंपन के तथा म अधिक कंपन का भी हो सकता है। इन पाँचों को 'विकृत स्वर' कहते हैं। इनके स्वराक्षरों के नीचे छोटी अधोरेखा रहती हैं। ये स्वराक्षर निम्न प्रकार से लिखते हैं।

स री॒ री ग॒ ग म म॒ प ध॒ ध नि॒ नि

स्वर-सप्तक: सात स्वरों के स्वरसमूह को 'स्वर-सप्तक' कहते हैं। सहजता से फूँक लगाने पर 'मध्य सप्तक' मिलता है। इसके नीचे से मिलने वाले सात स्वरों को 'मंद्र सप्तक' एवं ऊपरी स्तर के सात स्वरों को 'तार सप्तक' कहते हैं। ये तीनों स्वरसप्तक निम्नानुसार लिखते हैं।

मंद्र - स़ री़ ग़ म़ प़ ध़ नि़   मध्य - स री ग म प ध नि   तार - सं रीं गं मं पं धं निं

तीनों सप्तकों में विकृत-स्वरों के सभी संभाव्य प्रकार नीचे दिए है।

मंद्र - री़॒ ग़॒ म़॒ ध़॒ नि़॒   मध्य - री॒ ग॒ म॒ ध॒ नि॒   तार - रीं॒ गं॒ मं॒ धं॒ निं॒

राग - स्वरों के विशिष्ट संयोगों से रागों का निर्माण होता है। संयोग अनेक प्रकार के हो सकते हैं, किंतु जिन स्वर-संयोगों में रंजकता होती है, वे ही 'राग' कहलाते हैं। स्वरों में आरोह-अवरोह, वादी-संवादी, वर्ज्यावर्ज्य आदि भेद हैं। इनका ध्यान रखकर स्वरों का जो विन्यास किया जाता है, उसी से 'राग' का आविष्कार होता है।

शंख - सामान्यतः शंख वादन में कुल पाँच स्वरों का प्रयोग होता है। वे निम्नानुसार हैं।

सृ पृ स ग प

इसके आगे **नि** तथा **सं** स्वर भी आते है, जिनका उपयोग कभी - कभी किया जाता है।

आनक तथा तालवाद्य - पणव, आनक, खर्जानक, त्रिभुज, झल्लरी जैसे तालवाद्यों के वादन का स्वरलेखन निम्न प्रकार से किया जाता है। उन्हें ध्वन्याक्षर कहते हैं।

वाद्य	**ध्वनि**	**ध्वन्याक्षर**
पणव	ध्वंकार	**ध्वं**
खर्जानक	धंकार	**धं**
आनक	तंकार	**त**
त्रिभुज	टंकार	**टं**
झल्लरी	झंकार	**झं**

शारिकाओं द्वारा आनक पर आघात करने से 'तंकार' उत्पन्न होता है। आनक के वादन विन्यास को व्यक्त करने के लिए 'त' के अतिरिक्त और भी ध्वन्याक्षरों का उपयोग किया जाता है, जिनका विवरण निम्नानुसार है।

अपेक्षित वादन	**ध्वन्याक्षर**
* दोनों शारिकाओं से एक साथ तंकार	**थ**
* दोनों शारिकाओं से एक साथ अनुतंकार	**थ्र**
* प्रमुख तंकार के किंचित् पहले दूसरे शारिका से -	
१. एक तंकार	**त्त**
२. अनुतंकार	**त्र**

* केरवा रणन: दा बा दा बा
त ^त^ त ^त^ त ^त^ त ^त^   =   त्र

* खेमटा रणन: दा
त ^तत^   =   त्र

* शारिकाएँ परस्पर टकराने से आनेवाली 'टिक्' ध्वनि : **+**

रणन - तंकार को यदि नियंत्रित नहीं किया, तो शारिका आवरण पर दो-चार बार उछलती है। क्रमश:क्षीण होते जाने वाले इस नाद को 'अनुतंकार' कहते हैं। इनका योग्य नियन्त्रण कर, (१) केवल तंकार, (२) एक तंकार एवं एक अनुतंकार अथवा (३) एक तंकार एवं दो अनुतंकार प्राप्त कर सकते हैं। इस प्रकार के तंकारनुवर्ति अनुतंकार के साथ, तांत के प्रत्याघाती कंपनों को मिलाकर 'रणन' बनता है। केरवा रणन में चार तंकारानुवर्ति अनुतंकार तथा खेमटा रणन में एक तंकार के बाद दो अनुतंकारों का वादन अपेक्षित है। खेमटा ताल में रणन संघ का वैशिष्ट्य है।

मात्रा - स्वर लेखन में जिस प्रकार कौनसा स्वर बजेगा, यह स्पष्ट लिखते है, उसी तरह वह स्वर का कितने समय तक वादन होगा यह भी निर्देशित करना आवश्यक है। इस कालमापन के इकाई को 'मात्रा' कहते हैं। इसका कोई अलग चिन्ह नहीं है।

जब कोई स्वराक्षर या ध्वन्याक्षर अकेला लिखा जाता है, तब उसका अर्थ है कि वह स्वर या ध्वनि एक मात्रा की है। जैसे - **स री ग त टं झं त्र** आदि।

मात्रांश - जब एक 'मात्रा' में एक से अधिक स्वर या ध्वनि आते हैं तब उन स्वरों या ध्वनियों के लिए अपेक्षित कालमान को 'मात्रांश' कहते हैं। एक मात्रा में आने वाले इन स्वराक्षरों या ध्वन्याक्षरों के नीचे एक कोष्ठक लगाया जाता है।

स   -   १ मात्रा में १ स्वर (एक स्वर ¹/₂ सेकंड का होगा)

सरी   -   १ मात्रा में २ स्वर (प्रत्येक स्वर ¹/₄ सेकंड का होगा)

सगप - १ मात्रा में ३ स्वर (प्रत्येक स्वर $^{१}/_{६}$ सेकंड होगा)

ततत त - १ मात्रा में ४ स्वर (प्रत्येक स्वर $^{१}/_{८}$ सेकंड का होगा)

रचना-शीर्षक के दाहिनी ओर ताल के पश्चात् दिया हुआ अंक (जैसे - ३६०, २४०, १८०, १२०, १००आदि) एक मिनट में उस रचना की कितनी मात्राएं बजेगी यह दर्शाता है। उदाहरणार्थ, 'खेमटा ३६०', ऐसा लिखा है, तो संचलन की गति एक मिनट में १२० रहेगी, किंतु मात्राएं ३६० बजेगी।

अवग्रह - किसी भी स्वर को एक या अधिक मात्रा या मात्रांश के लिए दीर्घ करना हो, तो उस स्वर-विस्तार को '**ऽ**' इस अवग्रह चिन्ह से दर्शाया जाता है; तथा उसका उच्चारण '**अ**' होता है। उदाहरणार्थ, यदि एक मात्रा का कालांश $^{१}/_{२}$ सेकंड हो, तो-

स रीग ऽ ..... एक मात्रा **ग** विस्तार ($^{१}/_{२}$ सेकंड)

पऽऽऽ ..... तीन मात्रा **प** विस्तार ($१^{१}/_{२}$ सेकंड)

सऽसस ..... प्रथम '**स**' का १ मात्रांश विस्तार ($^{१}/_{८}$ सेकंड)

सऽऽग ..... प्रथम '**स**' का २ मात्रांश विस्तार ($^{१}/_{४}$ सेकंड)

यति - किसी भी स्वर का (एक या आधिक मात्रा या मात्रांश के लिए) विराम करना हो, तो '**–**' इस यति चिन्ह से किया जाता है। उसका उच्चारण '**य**' होता है।

उदाहरणार्थ, यदि एक मात्रा का कालांश $^{१}/_{२}$ सेकंड हो तो -

पमध - : '**ध**' के बाद १ मात्रा यति ($^{१}/_{२}$ सेकंड)

तत–त : दूसरे '**त**' के बाद १ मात्रांश यति ($^{१}/_{८}$ सेकंड)

स– : **'स'** के बाद १ मात्रांश यति ($^{१}/_{४}$ सेकंड)

–प : प्रथम १ मात्रांश यति ($^{१}/_{४}$ सेकंड) बाद में **'प'** ($^{१}/_{४}$ सेकंड)

अभ्यास की दृष्टि से प्रारंभ में यति के स्थान पर **'य'** कह सकते है। बाद में **'य'** का उच्चारण छोड कर, मन में उतने यति की गिनती करते हुए कहिए या बजाइए।

अवग्रह तथा यति साथ साथ आने पर लेखन निम्नानुसार होगा।

री म ऽ - : १ मात्रा **म** विस्तार के बाद १ मात्रा यति ($^{१}/_{२}$ सेकंड)

सऽ–ग **:** १ मात्रांश **स** विस्तार के बाद १ मात्रांश यति ($^{१}/_{८}$ सेकंड)

अवग्रह तथा यति को स्वर जैसा ही माना जाता है। इसलिए इनके चिन्ह भी स्वराक्षर या ध्वन्याक्षर के स्तर पर ही अंकित किए जाते हैं।

ताल : मात्राओं की विशिष्ट, नियमबद्ध एवं रंजक योजना को 'ताल' कहते हैं। मात्राओं के इस विन्यास में जब ह्रस्व-दीर्घता, आवर्तनात्मक गति, अवसान अथवा वस्तुमान, समांतरता, यति तथा कुछ बोल होते हैं, तब इसको 'ताल' की संज्ञा प्राप्त होती है।

लेखन करते समय प्रयुक्त गट, गण, चरण आदि के चिन्ह तथा वर्णन निम्नानुसार है।

गट : ताल के अनुसार एक या अधिक मात्राओं से बने विशिष्ट समूह को 'गट' कहते हैं। गट-चिन्ह ',' ऐसा होता है।

गण : दो या अधिक गटों के समूह को 'गण' कहते हैं। यह चिन्ह '|' ऐसा होता है, जिसे 'गणदंड' कहते हैं।

चरण : दो या अधिक गण एकत्र आने पर अथवा गणों के ताल-आवर्तन से 'चरण' बनता है। इस चिन्ह '‖' को 'चरणदंड' कहते है, जिसे चरण के प्रारंभ तथा अंत में अंकित करते हैं।

पुनश्चरण : किसी एक चरण का पुनर्वादन अपेक्षित होने पर, उस चरण के अंत में 'पुनश्चरण' का ''ः||''यह चिन्ह लगाया जाता है।

केरवा ताल : इसमें ४ मात्राएं तथा उसके १ गण में २ मात्राएं होती है। केरवा-१२० लय के अनुसार १ मिनट में $^{१}/_{२}$ सेकंड की १२० मात्राओं का वादन होता है। यह ताल १०० तथा १६० लय का भी होता है, जिनका प्रयोग कुछ उद्घोषों में किया गया है।

खेमटा ताल : उसमें १२ मात्राएं, तथा इसके १ गण में ६ मात्राएं होती है। इस ताल में संचलन करते समय $^{१}/_{६}$ सेकंड की ३६० मात्राओं का वादन होता है।

दादरा ताल : यह ताल ६ मात्राओं का तथा इसके एक गण में ३ मात्राएं होती है। लय १२० का हो, तो हरेक मात्रा $^{१}/_{२}$ सेकंड की होती है। यह ताल १८० लय का भी होता है।

झपताल : झपताल १० मात्राओं का तथा प्रत्येक गण में ५ मात्राएं होती है। इसके एक मिनट में $^{१}/_{४}$ सेकंड की २४० मात्राओं का अथवा $^{१}/_{२}$ सेकंड की १२० मात्राओं का वादन होता है।

रूपक ताल : इसमें सात मात्राएं होती है। इसके १ मिनिट में $^{१}/_{२}$ सेकंड की १२० मात्राओं का वादन होता है।

लय : एक मिनट में बजाए जाने वाली मात्राओं की संख्या उस रचना का 'लय' होती है।

सांतर : शंख, वंशी आदि वाद्यों में मुखाग्र पर 'जिह्वाघात' (Tonguing) करते हुए प्रत्येक स्वर का अलग से बजाना ही 'सांतर' वादन कहलाता है। स्वरांतर का अन्य चिन्ह न लिखा हो, तो वादन 'सांतर' है ऐसा समझना चाहिए।

निरंतर : इन वाद्यों में 'जिह्वाघात' का प्रयोग न करते हुए एक ही फूंक में स्वर बदलने से 'निरंतर' वादन होता है। अर्धचंद्राकृति आकार का ' ⌒ ' यह चिन्ह संबंधित स्वरों के ऊपर लगाकर निरंतर वादन सूचित किया जाता है।

अपना घोष प्रांगणीय कार्यक्रमों के लिए प्रयुक्त होने के कारण हमारा वादन सांतर-प्रधान है। तथापि रंजकता की दृष्टि से कहीं कहीं निरंतर वादन भी किया जाता है।

आघात: किसी विशिष्ट स्वर का वादन उसके सहज स्तर से भी अधिक जोर लगाकर करना अपेक्षित है, तो उस स्वर के ऊपर ‘ ^ ’ यह ‘आघात-चिन्ह’ अंकित करते हैं।

आघात के अन्य प्रकार, जिनका प्रयोग संचलन की रचनाओं में नहीं होता है, बल्कि उद्‌घोष में होता हैं, निम्नानुसार है।

प (<)	इस स्वर की ध्वनि प्रारंभ में कम तथा धीरे धीरे अंत में बढानी चाहिये।
ग (>)	इस स्वर की ध्वनि आरंभ में अधिकतम तथा अंत में धीरे धीरे न्यूनतम होगी।
म (<>)	इस स्वर की ध्वनि क्रमशः प्रारंभ में न्यूनतम, मध्य में अधिकतम तथा अंत में पुनः न्यूनतम आएगी।

प्रभावी परिणाम केलिए इन चिन्हों से अंकित आघातयुक्त वादन का प्रयोग किया जाता है।

लयभंग - किसी विशिष्ट (विशेषतः अंतिम) स्वर का वादन, उसके समान्य कालमान से अधिक कालमान के लिए अपेक्षित हो, तो उसे ‘लयभंग’ के ‘ ⟶ ’ इस चिन्ह से सूचित करते हैं।

दीर्घयति - यदि ‘यति’ एक गण से भी अधिक हो, तो उसे ‘दीर्घयति’ के ‘।⌞२⌟।’ इस चिन्ह से दर्शाया जाता है। इस का अर्थ है, दो गणों की यति या विराम। ‘**२**’ के स्थान पर अन्य अंक लिखकर उतने गणों की यति सूचित करते हैं।

क्रमभेद - जब पुनश्चरण में अंतिम गणों का वादन भिन्न प्रकार से अपेक्षित होता है तब इन गणों को आवृत्त करने वाला कोष्ठक ऊपर से लगाकर उसे ‘**१**’ क्रमांक देते है तथा इसी प्रकार के कोष्ठक में अपेक्षित भिन्न वादन के गण लिखकर उसे ‘२’ क्रमांक देते है। इसे ‘क्रमभेद’ कहा जाता है। | १ :‖ २ | ‖

इसका अर्थ यह होता है कि चरण दूसरी बार बजाते समय क्र. **१** कोष्ठक से आवृत्त गणों के बजाय क्र. **२** कोष्टक से आवृत गणों का वादन करना।

कण-स्वर - मुख्य स्वर का वादन करते उसके पहले या बाद में किसी अन्य स्वर का अत्यल्प, स्पर्श-मात्र वादन अपेक्षित

हो, तो इन अत्यल्प कालमान के स्वरों को कण-स्वर कहते हैं। स्वराक्षर या ध्वन्याक्षर को आधा लिखकर कण-स्वर दर्शाते हैं। उदा. **स्, र्, ग्, म्, ध्, न्, त्र** में **त्, त्त** में **त्** आदि.

ध्रुव पद : रचना के जिस पंक्ति को प्रत्येक चरण के बाद बजाया जाता है उसे 'ध्रुवपद' कहते हैं तथा उसके अंत में इसका संक्षिप्त रूप '।।ध्रु।।' अंकित करते हैं।

प्रस्ताव पद : रचना का वृत्त तथा शैली सूचित करने वाले चरण को 'प्रस्ताव पद' कहते हैं। यह रचना के प्रारंभ में आता है।

सेतु पद : रचना के वृत्त तथा शैली बदल सूचित करते समय, दो चरणों के बीच आनेवाले चरण को 'सेतु पद' कहते हैं।

रचना लेखन : प्रांगणीय तथा सांघिक वादन के लिए उपयुक्त ऐसी जो स्वरावली बनायी जाती है, उसे 'रचना' कहते हैं। इसमें अनेक चरण हो सकते हैं। अच्छी रचना का प्रत्येक चरण अपने आप में एक सांगीतिक वाक्य (Musical Sentence) अथवा रचना का स्वयंपूर्ण भाग जैसा रहता है।

लेखन के आरंभ में शीर्षक लिखते है। इस के प्रथम (याने बाएं कोने के) भाग में 'वाद्य का नाम' मध्य में 'रचना का नाम' (कोष्टक में उसका विशेष नाम या राग का नाम) तथा दाहिने कोने में 'ताल व लय' का उल्लेख करते हैं।

वंशी रचना-शीर्षक के नीचे संबंधित रागों का आरोहण - अवरोहण दिया गया है। रचना अभ्यास करने से पहले इन आरोहण - अवरोहण का पर्याप्त अभ्यास करने से रचना अभ्यास करने में सुविधा होगी।

रचना-लेखन के प्रारंभ में नाद-ब्रह्म का आद्याक्षर ।। ॐ ।। ऐसा लिखना चाहिए। सामान्यतः एक पंक्ति में चार गण लिखते हैं।

सूचनायें

१) ध्वजारोपणम्, नैमित्तिकानि संबंधित सभी प्रणाम तथा उद्घोषों का वादन केवल संघ के कार्यक्रमों में ही करना चाहिए। अन्य संस्थाओं द्वारा इनका वादन करना वर्जित है।

२) 'प्रबोधन' के अलावा अन्य सभी उद्घोषों के पूर्व संघोष बजाना अनिवार्य है।

३) प्रबोधन, जागरण, दीपनिर्वाण सूचना, दीपनिर्वाण के उद्घोष निर्धारित समय पर ही बजाना चाहिए। अन्य उद्घोष न्यूनतम १० मिनट पूर्व बजाना चाहिए।

४) किसी भी कार्यक्रम के पूर्व उद्घोष केवल एक बार ही बजाना चाहिए। उद्घोष नेकर पहनकर ही बजाना अपक्षित है।

५) केवल बौद्धिक या शारीरिक परिक्षायें अथवा विशेष प्रसंगों में 'कार्यक्रम प्रारंभ' का उद्घोष कर सकते हैं। अन्य कार्यक्रमों का आरंभ सीटी बजाकर करना चाहिए।

६) बौद्धिक वर्ग के अंत में कोई भी उद्घोष नहीं बजाना चाहिए।

७) वाद्य समता व विस्तृत लिपि परिचय 'घोष परिचय' पुस्तिका में है।

८) प्राथमिक पाठ व शिक्षण पद्धति 'घोष शिक्षण विधि' पुस्तिका में है।

* * *

शंख प्राथमिक पाठ - स (तीसरा) स्वर

1	‖	स	ऽ	|	ऽ	ऽ –	‖	
2	‖	स	ऽ –	|	स	ऽ –	‖	
3	‖	स	स	|	स	स –	‖	
4	‖	सस	सस	|	सस	स –	|	
5	‖	सससस	स –	|	सससस	स –	‖	
6	‖	सससस	सससस	|	स	ऽ –	‖	

शंख प्राथमिक पाठ - प़ (दूसरा) स्वर

1	‖	प़	ऽ	|	ऽ	ऽ –	‖
2	‖	प़	ऽ –	|	प़	ऽ –	‖
3	‖	प़	प़	|	प़	प़ –	‖
4	‖	प़प़	प़प़	|	प़प़	प़ –	‖
5	‖	प़प़प़प़	प़ –	|	प़प़प़प़	प़ –	‖
6	‖	प़प़प़प़	प़प़प़प़	|	प़	ऽ –	‖

शंख प्राथमिक पाठ - स़ (पहला) स्वर

1	‖	स़	ऽ	|	ऽ	ऽ –	‖
2	‖	स़	ऽ –	|	स़	ऽ –	‖
3	‖	स़	स़	|	स़	स़ –	‖
4	‖	स़स़	स़स़	|	स़स़	स़ –	‖
5	‖	स़स़स़स़	स़ –	|	स़स़स़स़	स़ –	‖
6	‖	स़स़स़स़	स़स़स़स़	|	स़	ऽ –	‖

शख प्राथमिक पाठ - स़ प़ स स्वर

1 ‖ सस सस | सस स– |

| प़प़ प़प़ | प़प़ प़– |

| स़स़ स़स़ | स़स़ स़– ‖

2 ‖ सस सससस | सस स– |

| प़प़ प़प़प़प़ | प़प़ प़– |

| स़स़ स़स़स़स़ | स़स़ स़– ‖

3 ‖ सस सऽसस | सस स– |

| प़प़ प़ऽप़प़ | प़प़ प़– |

| स़स़ स़ऽस़स़ | स़स़ स़– ‖

4 ‖ सस ससऽस | सस स– |

| प़प़ प़प़ऽप़ | प़प़ प़– |

| स़स़ स़स़ऽस़ | स़स़ स़– ‖

5 ‖ सस सससऽ | सस स– |

| प़प़ प़प़प़ऽ | प़प़ प़– |

| स़स़ स़स़स़ऽ | स़स़ स़– ‖

6 ‖ सस सऽऽस | सस स– |

| प़प़ प़ऽऽप़ | प़प़ प़– |

| स़स़ स़ऽऽस़ | स़स़ स़– ‖

7 ‖ स़ ऽ– | प़ ऽ– | स ऽ– |

| स ऽ– | प़ ऽ– | स़ ऽ– ‖

8 ‖ स़प़ स़प़ | प़ ऽ– | प़स प़स | स ऽ– |

| सप़ सप़ | प़ ऽ– | प़स़ प़स़ | स़ ऽ– ‖

शंख प्राथमिक पाठ - ग (चौथा) स्वर

1 ‖ ग ग | ग ग– ‖

2 ‖ गग ग– | गग ग– ‖

3 ‖ गग गग | गग ग– ‖

4 ‖ गगगग गग | ग S– ‖

5 ‖ गSगग गग | ग S– ‖

6 ‖ गSSग गग | ग S– ‖

शंख प्राथमिक पाठ - स़ प़ स ग स्वर

1 ‖ ग ग | ग S– |

| स स | स S– |

| प़ प़ | प़ S– |

| स़ स़ | स़ S– ‖

2 ‖ गग गग | ग S– |

| सस सस | स S– |

| प़प़ प़प़ | प़ S– |

| स़स़ स़स़ | स़ S– ‖

3 ‖ स़ S– | प़ S– |

| स S– | ग S– |

| ग S– | स S– |

| प़ S– | स़ S– ‖

4 ‖ स़ स़स़ | प़SSप़ प़– |

| स सस | गSSग ग– |

| ग गग | सSSस स– |

| प़ प़प़ | स़SSस़ स़– ‖

शंख प्राथमिक पाठ - प (पाँचवाँ) स्वर

1 ‖ प ऽ– | प ऽ– ‖

2 ‖ प प | प ऽ– ‖

3 ‖ पप प | प ऽ– ‖

4 ‖ पप पप | प ऽ– ‖

5 ‖ प पपऽप | प ऽ– ‖

6 ‖ प पपपऽ | प ऽ– ‖

शंख प्राथमिक पाठ - स़ प़ स ग प स्वर

1 ‖ स़ ऽ– | प़ ऽ– | स ऽ– | ग ऽ– | प ऽ– |

| प ऽ– | ग ऽ– | स ऽ– | प़ ऽ– | स़ ऽ– ‖

2 ‖ स़स़ स़– | प़प़ प़– | सस स– | गग ग– | प ऽ– |

| पप प– | गग ग– | सस स– | प़प़ प़– | स़ ऽ– ‖

3 ‖ स़प़ स़प़ | स ऽ– | सग सग | प ऽ– |

| पग पग | स ऽ– | सप़ सप़ | स़ ऽ– ‖

4 ‖ स़ प़प़ | सससस स | प़ सस |

| गगगग ग | स गग | पपपप प |

| प गग | सससस स | ग सस |

| प़प़प़प़ प़ | स प़प़ | स़स़स़स़ स़ ‖

शंख प्रगत पाठ - स़ प़ स ग प स्वर

1 ‖ स़स़स़स़ स़– | प़ऽप़प़ प़– | ससऽस स– | गऽऽग ग– | प ऽ– |
| पपपप प– | गऽगग ग– | ससऽस स– | प़ऽऽप़ प़– | स़ ऽ– ‖

2 ‖ स़ प़प़ | प़ सस | स गग | ग पप | नि॒ ऽ– |
| नि॒ पप | प गग | ग सस | स प़प़ | स़ ऽ– ‖

3 ‖ स़ स़प़स़प़ | प़ प़स | स सगसग | ग गप | नि॒ ऽ– |
| नि॒ पगपग | ग गस | ग गसगस | स सप़ | स़ ऽ– ‖

4 ‖ स़ऽस़ , प़प़प़ | सऽ– , गगग | पऽप , पऽ– |
| पऽप , गगग | सऽ– , प़प़प़ | स़ऽस़ , स़ऽ– ‖

5 ‖ स़स़स़ , प़ऽप़ | प़प़प़ , सऽ– | ससस , गऽग | गगग , पऽ– |
| पपप , गऽग | गगग , सऽ– | ससस , प़ऽप़ | प़प़प़ , स़ऽ– ‖

6 ‖ स़ऽप़ , स़ऽप़ | ससस , गऽ– | सऽग , सऽग | पपप , पऽ– |
| पऽग , पऽग | ससस , प़ऽ– | सऽप़ , सऽप़ | स़स़स़ , स़ऽ– ‖

शंख　　　　**श्रीराम**　　　　केरवा-१२०

॥ॐ॥ प़स　सगऽस | प़　सग | प़ऽप़प़　प़प़ | स–　– ॥
॥ प़प़　सग | प़प़　सग | प़ऽप़प़　प़प़ | स　ऽग |
| प़प़　सग | प़प़　सग | प़ऽप़प़　प़प़ | स–　– :॥
॥ सगऽस　प़स | प़स　गस | सगऽस　गस | प़　ऽ– |
| सगऽस　प़स | प़स　गस | सगऽस　प़प़ | स–　– :॥
॥ गस　प़स | गऽऽग　गग | प़स　ऽग | प　ऽ– |
| गस　प़स | गऽऽग　गग | प़स　ऽग | स　ऽ– :॥

शंख　　　　**उदय**　　　　खेमटा-३६०

॥ॐ॥ प़ऽऽ , ऽऽस | गऽग , गऽग | प़ऽ– , ससस | सऽ– , ––– ॥
॥ प़ऽप़ , सऽस | प़ऽप़ , सऽस | प़ऽऽ , गऽऽ | सऽऽ , प़ऽ– |
| प़ऽप़ , सऽस | प़ऽप़ , सऽस | प़ऽऽ , गऽग | सऽऽ , ऽ–– :॥
॥ सप़स , गऽग | सगस , प़ऽ– | गऽग , गगऽ | प़प़प़ , प़ऽ– |
| सप़स , गऽग | सगस , प़ऽ– | गऽग , गगऽ | सऽऽ , ऽ–– :॥

शंख   **सोनभद्र**   केरवा - १२०

॥ॐ॥	प़	सस	|	ग	स	|	प़स	ऽग	|	स	ऽ–	॥
॥	प़प़	सस	|	ग	ऽ–	|	गग	सस	|	प़	ऽ–	|
|	प़प़	सस	|	ग	स	|	प़ऽप़प़	प़प़	|	स–	–	:॥
॥	सऽसस	सस	|	गस	प़स	|	प़ऽप़प़	प़स	|	ग	ऽग	|
|	सऽसस	सस	|	गस	प़स	|	प़ऽप़प़	प़प़प़ऽ	|	स–	–	:॥
॥	सग	ऽग	|	प	ग	|	सग	ऽग	|	प़–	प़–	|
|	सग	ऽग	|	प	ग	|	प़स	सग	|	स	ऽ–	:॥
॥	गऽऽग	गग	|	सग	प–	|	सऽऽस	सस	|	गस	प़–	|
|	गऽऽग	गग	|	सग	प–	|	प़स	ऽग	|	स	ऽ–	:॥

शंख **किरण** केरवा - १२०

‖ॐ‖ स– ग– | स– –प़ | स– सस | स– – ‖

‖ स– प़– | स– प़– | सप़ सप़ | स ऽ– |

| ग– स– | ग– स– | प़– ग | स ऽ– :‖

‖ सप़ सग | स– स– | गऽऽग गग | ग ऽ– |

| सप़ सग | स– प़ | सऽऽस सस | स– – :‖

शंख **गायत्री** खेमटा - ३६०

‖ॐ‖ , ––स ‖

‖ प़ऽप़ , सऽस | गऽग , सऽस | प़ऽप़ , सऽस | गऽ– , ––स |

| प़ऽप़ , सऽस | गऽग , सऽस | प़ऽप़ , प़ऽप़ | सऽ– , –––:‖

, ––प़ ‖

‖ सऽस , सऽस | सऽ– , गऽ– | सऽस , सऽस | प़ऽ– , ––प़ |

| सऽस , सऽस | सऽ– , गऽ– | प़ऽप़ , प़ऽप़ | सऽऽ , ऽ––:‖

शंख **मरुधर** **खेमटा-३६०**

||ॐ|| प़ऽऽ , सऽस | प़ऽप़ , सऽऽ | प़ऽ– , गऽग | सऽऽ , ऽ–– ||

|| प़ऽऽ , सऽस | प़ऽऽ , सऽस | गऽस , प़ऽस | प़ऽस , गऽ– |

| प़ऽऽ , सऽस | प़ऽऽ , सऽस | गऽस , प़ऽप़ | सऽऽ , ऽ––:||

|| सऽस , सप़स | गऽग , गसग | सऽस , सऽस | प़ऽऽ , ऽ–– |

| सऽस , सप़स | गऽग , गसग | प़ऽप़ , प़ऽप़ | सऽ– , –––:||

|| गऽग , गऽ– | सऽस , सऽ– | प़सग , प़ऽप़ | सऽग , पऽ– |

| गऽग , गऽ– | सऽस , सऽ– | प़सग , पऽप़ | सऽ– , –––:||

शंख **मेवाड़** **केरवा-१२०**

||ॐ|| सग पग | स ग– | प पऽऽप | प ऽ– ||

|| प़ सऽऽस | स– – | ग पऽऽप | प– – |

| प़ सऽऽस | सग पग | प़ प़ऽऽप़ | स– – :||

|| ग ग | ग ग– | सऽऽग प | पऽऽप प– |

| ग ग | ग ग– | स ऽऽसस | स– – :||

‖ गस पृस | पृपृ सग | सस सस | सस सस |

| गस पृस | पृपृ सग | स सऽऽस | स− − :‖

शंख **चेतक** खेमटा - ३६० केरवा-१२०

‖ॐ‖ , −−पृ ‖

‖ सऽस , गऽग | पऽ− , −−पृ | सऽस , गऽग | पऽ− , −−ग |

| पऽऽ , ऽ−ग | पऽऽ , ऽ−ग | पऽऽ , ऽऽऽ | ऽऽऽ , −−− ‖

‖ससगग पग |सऽ−ग पग |ससगग पग | सस पृ− |

| पृऽ−स गस |पृपृपृस गस |पृऽ−स गपृ | स− − :‖

‖पृपृपृपृ पृ− |सऽसस स− |पृपृपृपृ पृ− |गऽगग ग− |

| सससस स− |पऽपप प− | पप गग | सस पृपृ |

| पृऽपृपृ सग | स ऽ− :‖

*‖ पृपृपृपृ पृपृपृपृ | सससस सससस | गगगग गगगग | प ऽ− ‖

* यह चरण सेतुपद है। इसे सभी वादक एक साथ बजाना चाहिए।

शंख

अजेय

केरवा-१२०

||ॐ|| पऽ–ग सग | पऽ–ग सग | प– पऽऽप | प ऽ– ||

|| प़स सग | –प गस | गप ऽप | प गस |

| प़स सग | –प गस | प़– ग | स ऽ– :||

|| गऽ–स सस | स– – | पऽ–ग गग | ग– – |

| गऽ–स सस | स सप | प़ऽप़प़ प़प़ | स– – :||

|| सऽसस सस | – – | गऽगग गग | – – |

| सगपग स– | सगपग स– | सगपग प़प़ | स– – :||

शंख

दशमेश

खेमटा-३६०

||ॐ|| प़ऽप़ , सऽ– | गऽग , पऽ– | गऽऽ , पऽग | सऽऽ , ऽ–– ||

|| प़सग , प़ऽस | गऽ– , गऽ– | ससस , सऽस | प़ऽऽ , ऽऽस |

| प़सग , प़ऽस | गऽ– , गऽ– | सऽ– , गगग | सऽऽ , ऽ–– :||

‖ सऽग , पऽग | ससस , सऽ– | सऽग , पृऽपृ | गगग , गऽ– |

| सऽग , पऽग | ससस , सऽ– | सऽग , पऽपृ | सऽऽ , ऽ––ः‖

, ––पृ ‖

‖ ससस , सऽस | गगग , पऽ– | गसग , पऽ– | पऽऽ , ––पृ |

| ससस , सऽस | गगग , पऽ– | गसग , पऽ– | सऽऽ , ऽ––ः‖

शंख **दीप** खेमटा-३६०

‖ॐ‖ पगस , पृऽऽ | सऽस , गऽग | पऽऽ , पृपृपृ | सऽ– , ––– ‖

‖ पऽप , गऽग | सऽ– , ––पृ | सपृस , गसग | पऽपृ , सऽग |

| पऽप , गऽग | सऽ– , ––पृ | सपृस , गसग | सऽ– , –––ः‖

, –सस ‖

‖ सऽस , सपृस | गऽग , गसग | पऽग , सऽग | पऽ– , –सस |

| सऽस , सपृस | गऽग , गसग | पगस , पृपृऽ | सऽ– , –––ः‖

‖ गऽप , सऽग | पृऽस , गऽप | सऽग , पृसग | पगस , पृऽ– |

| गऽप , सऽग | पृऽस , गऽप | सऽग , पृपृपृ | सऽ– , –––ः‖

शंख　　　　　　　　**तरंग**　　　　　　　　केरवा-१२०

||ॐ|| सप़　ऽस | ग　प | स　ऽप़ | स　–ग ||

|| स　ऽप़ | स　ऽग | प　ऽग | सप़　सग |

| स　ऽप़ | सप़　सग | प　ऽग | स　–ग :||

|| सप़　सग | स　ऽप़ | सप़　सग | प　ऽग |

| सप़　ऽग | स　ऽप़ | स　ऽग | प　–ग :||

|| प　ऽग | पग　पग | स　ऽप़ | स　–ग |

| प　ऽग | पग　पग | स　ऽग |१ स　–ग :||

|२ स　ऽ– ||

शंख **मंगला** खेमटा-३६०

‖ॐ‖ सऽग , पऽग | सऽग , पऽग | ससऽ , गगऽ | पऽऽ , ऽऽ– ‖

‖ सऽऽ , सऽऽ | सऽ– , सपृऽ | गऽऽ , गऽऽ | गऽ– , गसग |

| पऽप , गऽग | सऽस , पृऽ– | पृऽपृ , सऽग | सऽ– , ––– :‖

, ––स ‖

‖ पृऽस , पृऽस | पृऽपृ , सऽ– | गऽऽ , पगस | पृऽऽ , ऽ–स |

| पृऽस , पृऽस | पृऽपृ , सऽ– | गऽऽ , पृऽपृ | सऽ– , ––– :‖

‖ सपृस , गऽग | पऽऽ , ऽऽप | गपग , सगस | पृऽ– , पृऽ– |

| सपृस , गऽग | पऽऽ , ऽऽप | पृपृपृ , सऽग | सऽ– , ––– :‖

‖ पपऽ , गगऽ | ससऽ , पृपृऽ | पगस , पगस | पृऽऽ , ऽऽ– |

| पपऽ , गगऽ | ससऽ , पृपृऽ | पगस , पृपृऽ | सऽ– , ––– :‖

शंख		विनायक		केरवा-१२०

‖ॐ‖	प	ऽप	|	प़स	ऽग	|	पपपऽ	पप	|	प	ऽ–	‖
‖	प़स	ऽग	|	पग	ऽस	|	सग	ऽग	|	पऽपप	प–	|
|	प़स	ऽग	|	प़	प़प़	|	सग	पग	|	स	ऽग	|
|	प़स	ऽग	|	पग	ऽस	|	सग	ऽग	|	पऽपप	प–	|
|	सग	पग	|	सग	पग	|	सगपग	प़ऽऽप़	|	स–	–	:‖
‖	गप	ऽग	|	पऽपप	पप	|	–	–	|	–	–	|
|	पग	ऽग	|	–स	–स	|	गपगस	प़स	|	गप	गस	|
|	गप	ऽग	|	पऽपप	पप	|	–	–	|	–	–	|
|	पग	ऽग	|	–स	–स	|	प़प़	ग	|	स	ऽ–	:‖
‖	प़प़	स–	|	सग	स–	|	सगपऽ	गस	|	प	ऽप	|
|	प़प़	स–	|	सग	स–	|	सगपऽ	प़प़	|	स–	–	:‖

शंख

श्रीनिवास

खेमटा-३६०

‖ॐ‖ सऽस , पृऽस | गऽग , सऽग | पऽप , पऽप | पऽऽ , ऽऽ– ‖

‖ सऽस , सपृस | गऽग , गऽग | सऽस , सपृस | गऽग , ग–– |

| सऽस , सपृस | गऽग , गऽग | पृऽ– , गपग | सऽ– , ऽ––ः‖

‖ सऽऽ , ऽऽऽ | ऽ–स , पृऽस | गगग , पऽ– | गगग , पऽ– |

| सऽऽ , ऽऽऽ | ऽ–स , पृऽस | गगग , पऽग | सऽ– , –––ः‖

––पृ ‖

‖ सऽऽ , ऽऽपृ | सऽपृ , सऽपृ | गऽऽ , गऽस | गऽऽ , ऽ–– |

| पऽप , गऽग | पऽप , गऽग | गपग , पृऽपृ | सऽ– , ––पृः‖

शंख **परमार्थ** केरवा-१२०

||ॐ|| प़सऽप़ स | सगऽस ग | गपऽग पप | प ऽ– ||

|| प़ सससस | प़स ग | सग प | पग पग |

| प़ सससस | प़स ग | सग पग | स ऽ– :||

|| सऽऽस सस | गऽऽग गग | पपपऽ पपपऽ | प़ ऽ– |

| सऽऽस सस | गऽऽग गग | पपपऽ प़प़ | स– – :||

|| सऽप़स गऽसग | पप प– | पगसऽ प़सगऽ | पग स– |

| सऽप़स गऽसग | पप प– | पगसऽ प़प़ | स– – :||

|| प़स प़स | सगऽस ग | गपऽग प | ऽ ऽ– |

| प़स प़स | सगऽस ग | प– प़ | स– – :||

शंख **प्रतिध्वनि** खेमटा-३६०

||ॐ|| सऽग , पऽऽ | गऽ– , पऽग | सऽग , पऽऽ | गपग , सऽप़ |

| सऽग , पऽऽ | गऽ– , पऽग | सप़स , गपग | सऽऽ , ऽऽ– :||

‖ प़ऽऽ , सऽऽ | प़ऽऽ , गऽऽ | पऽप , पऽप | पऽऽ , ऽऽ– |

| प़ऽऽ , सऽऽ | प़ऽऽ , गऽऽ | प़ऽप़ , प़ऽप़ | सऽऽ , ऽऽ– :‖

, ––स ‖

‖ गऽऽ , ऽऽप | गऽऽ , ऽऽस | गऽऽ , ऽऽप | पऽ– , गऽस |

| गऽऽ , ऽऽप | गऽऽ , ऽऽस | प़ऽ– , प़ऽप़ | सऽ– , ––– :‖

शंख विक्रम खेमटा-३६०

‖ॐ‖ सऽस , गपऽ | सऽस , गपऽ | गऽऽ , पपऽ | सऽऽ , ऽ–– ‖

‖ प़ऽप़ , ससऽ | प़ऽऽ , ससऽ | प़प़ऽ , सगऽ | पऽऽ , ऽ–– |

| प़ऽप़ , ससऽ | प़ऽऽ , ससऽ | प़प़प़ , सगऽ | सऽ– , ––– :‖

‖ सऽग , पऽ– | प़सग , पऽ– | पऽऽ , गऽऽ | ससऽ , प़ऽ– |

| सऽग , पऽ– | प़सग , पऽ– | प़ऽऽ , गऽग | सऽऽ , ऽ–– :‖

‖ प़सग , पपऽ | पगस , प़सऽ | गऽग , पऽप | प़ऽस , प़ऽस |

| प़सग , पपऽ | पगस , प़सऽ | गऽग , प़प़ऽ | सऽ– , ––– :‖

‖ पपऽ , पपऽ | ––प़ , प़प़ऽ | गऽऽ , ऽऽग | पगस , प़सग |

| पपऽ , पपऽ | ––प़ , प़प़ऽ | गऽऽ , पपऽ | सऽऽ , ऽ–– :‖

शंख　　　　**रणजित**　　　　केरवा-१२०

‖ॐ‖ पSपप　पप | गप　गस | पSपप　पप | प　S– ‖

‖ प　SSसग | प　SSसग | पSSप　पSSप | स　ग– |

| प　SSसग | प　S– | पSSप　पSSप | स　S– :‖

–प़ ‖

‖ सSसस　गSगग | प　Sप | पपपS　सग | प　–प़ |

| सSसस　गSगग | प　Sप | प़प़प़S　गग | स　S– :‖

‖ पग　सग | पSSप　प– | प़Sसग　पगसप़ | सSसस　स– |

| पग　सग | पSSप　प– | प़Sसग　पगसप़ | स–　– :‖

‖ ससSस　सप़ | गगगग　सग | पप　पप | पप　पप |

| ससSस　सप़ | गगगग　सग | पप　पप | स　S– :‖

शंख जगन्नाथ खेमटा-३६०

‖ॐ‖ गपप , पऽप | गपप , पऽप | गपग , सऽग | पऽऽ , ऽ–– ‖

‖ पऽप , पऽ– | गऽग , गऽ– | प़ऽऽ , सगग | पऽऽ , ऽ–– |

| पऽप , पऽ– | गऽग , गऽ– | पऽ– , प़सग | सऽऽ , ऽ––:‖

, –प़स ‖

‖ गऽग , गऽग | पऽऽ , –सग | पऽग , पऽग | सऽ– , –प़स |

| गऽग , गऽग | पऽऽ , –सग | पपप , गऽग | सऽऽ , ऽ––:‖

‖ पऽऽ , पऽ– | प़सग , पगस | प़सग , पगस | गपऽ , ऽ–– |

| पऽऽ , पऽ– | प़सग , पगस | प़सग , पऽप़ | सऽऽ , ऽ––:‖

, ––प़ ‖

‖ सऽस , सऽप़ | गऽग , गऽस | पऽप , पऽग | प़ऽ– , ––प़ |

| सऽस , सऽप़ | गऽग , गऽस | पऽ– , प़प़प़ | सऽ– , –––:‖

शंख

साकेत

केरवा-१२० खेमटा-३६०

||ॐ|| –प़ ||

|| सऽसस सस | स –स | गऽगग गग | ग –ग |

| पऽपप पप | प ऽ– | प ऽऽपप | प– – ||

|| पऽऽ , गऽऽ | सऽऽ , प़ऽ– | सऽस , गसग | पऽऽ , ऽ–– |

| पऽऽ , गऽऽ | सऽऽ , प़ऽ– | सऽस , गपग | सऽऽ , ऽ–– :||

|| गपऽग स | सगऽस प़ | पप पप | सऽसस ग– |

| गपऽग स | सगऽस प़ | पप प़ऽप़प़ | स– – :||

|| पऽऽ ,गसप़ | पऽऽ, गसप़ | सगस ,गपग | पऽप, पऽ– |

| पऽऽ ,गसप़ | पऽऽ, गसप़ | सगस ,गगग | सऽऽ, ऽ–– :||

|| पग गस | ग ऽ– | प़प़ऽप़ प़प़ | सऽऽस सग |

| पग गस | ग ऽ– | प़प़ऽप़ सग | स– – :||

शंख

यादव

केरवा-१२०

‖ॐ‖ प़सऽग प | प़सऽग प | प पप | प ऽ– ‖

‖ सऽ–ग पप | सग प– | प़ऽप़प़ प़प़ | स ऽग |

| सऽ–ग पप | सग प– | प़ऽप़प़ प़प़ | स– – :‖

‖ पग सप़ | पऽ–ग सप़ | गगगग गग | सग प– |

| पग सप़ | पऽ–ग सप़ | गगगग गग | स ऽ– :‖

‖ प़ सऽऽग | प ऽऽपप | पग सऽऽग | प़– प़– |

| प़ सऽऽग | प ऽऽपप | पग प़ऽऽप़ | स– – :‖

–प़ ‖

‖ सऽसस सस | गप गस | गऽऽग गग | प –प़ |

| सऽसस सस | गप गस | गऽऽग गग | स ऽ– :‖

शंख **सुधीर** केरवा-१२०

‖ॐ‖	पऽपप	पग	पप़	सग	प	प़ऽऽप़	स–	–	‖
‖	स	सऽऽस	सग	प़स	ग	गऽऽग	गप	सग	।
।	प़	प़ऽऽप़	प़–	–	स	सऽऽस	सग	प़स	।
।	ग	गऽऽग	गप	सग	प़	प़ऽऽप़	स–	–	:‖
								–प़	‖
‖	स	ऽऽऽग	स–	–प़	ग	ऽऽऽप	ग–	–प़	।
।	प	ऽऽऽग	प	ऽऽऽप़	स	सऽऽग	प–	–प़	।
।	स	ऽऽऽग	स–	–प़	ग	ऽऽऽप	ग–	–प़	।
।	प	ऽऽऽग	प	ऽऽऽप़	स	सऽऽग	स–	–	:‖
‖	सप़	पग	गस	प़	सप़	गस	पग	प	।
।	सप़	पग	गस	प़	पऽपप	प़प़	स–	–	:‖
‖	पग	सग	पप़	सग	प	गऽऽग	ग	–	।
।	पग	सग	पप़	सग	प	प़ ⁀	स	–	:‖

शंख | **बजरंग** | खेमटा-३६० केरवा-१२०

‖ॐ‖ पगस , पगस | प़सग , सऽ– | पऽग , सऽग | पऽऽ , ऽ–– ‖

‖ सऽस , सप़स | गऽग , गपग | पऽप , पगस | प़ऽऽ , सऽग |

| सऽस , सप़स | गऽग , गपग | पऽ– , गपग | सऽऽ , ऽ––:‖

, ––प़ ‖

‖ सऽप़ , सऽप़ | सऽग , पऽ– | प़प़प़ , सऽग | स़ऽस़ , स़ऽप़ |

| सऽप़ , सऽप़ | सऽग , पऽ– | प़प़प़ , गगग | सऽऽ , ऽ––:‖

‖ सस गस | प़स ग– | गऽगग पग | सग प |

| पऽपप गप | ग स– | पप गप | ग स– |

| सस गस | प़स ग– | गऽगग पग | सग प |

| पऽपप गप | ग स– | स– सऽऽस | स– – :‖

‖ पग सग | प़प़प़प़ सग | गप ऽप | गपगऽ स– |

| पग सग | प़प़प़प़ सग | स ऽऽसग | स– – :‖

शंख

सागर

केरवा-१२०

‖ॐ‖	स	ऽऽसस	स	ऽऽसस	ग–	स–	प़	ऽप़	|
|	ग	ऽऽगग	ग	ऽऽगग	प–	ग–	स	ऽप़	|
|	प	ऽऽपप	प	ऽऽपप	प–	–	–	–	‖
‖	स–	प़ऽऽस	ग–	सऽऽग	प	ऽऽपप	पग	गस	|
|	प	ऽऽपप	पग	गस	प़–	–प़	स	ग–	|
|	सऽऽग	प	ऽऽपप	पग	गस	प	ऽऽपप	पग	|
|	गस	प़–	–प़	स	ग	सऽसस	स–	–	:‖
								–स	‖
‖	प़	ऽ	ऽप	गस	प़	ऽ	ऽप़	सग	|
|	प–	प़–	स–	ग–	पऽपप	पप	प–	–स	|
|	प़	ऽ	ऽप	गस	प़	ऽ	ऽप़	सग	|
|	प–	प़–	प–	प़–	स	ऽऽसस	स–	–	:‖

–प़ ||

|| सग गप | गग गप | सग गप | – –प़ |

| सग गप | गग गप | सग –प़ | स– – :||

शंख   वीरश्री   एकताल-१२०

||ॐ|| स ग | पऽप़प़ प़प़ | स – ||

|| प पग | प गस | प़ऽप़प़ प़प़ |

| सग पग | पऽप़प़ प़प़ | स – :||

|| प़स ग | सग प | प़स सग |

| गप गस | प– प़ | स – :||

|| गप सग | प़स गप | ग ऽऽपप |

| पग पप़ | सग गप | ग ऽऽप़प़ |

| प़ ––पप | गप सग | प़स गप |

| प ऽऽसग | प प़ | स – :||

शंख

भरत

खेमटा-३६०

||ॐ|| सऽप़ , सऽग | पऽग , सऽग | पऽऽ , प़ऽऽ | सऽऽ , ऽ–– ||

|| सऽप़ , ससग | पऽग , सऽग | पऽप , पपप | पऽऽ , गऽऽ |

| सऽप़ , ससग | पऽग , सऽग | पपप , प़ऽप़ | सऽऽ , ऽ–– :||

|| ससस , सऽस | प़ऽऽ , सऽऽ | गगग , गऽग | सऽऽ , गऽऽ |

| पपप , पऽप | पऽऽ , गऽऽ | ससस , सऽस | प़ऽऽ , ऽऽ– |

| ससस , सऽस | प़ऽऽ , सऽऽ | गगग , गऽग | सऽऽ , गऽऽ |

| पपप , पऽप | पऽग , सऽग | पपप , प़ऽप़ | सऽऽ , ऽ–– :||

*|| 8 ||

|| पऽग , गगग | गऽस , ससस | प़प़प़ , प़ऽप़ | सऽग , पऽऽ |

| पऽग , गगग | गऽस , ससस | प़सग , पऽप़ | सऽऽ , ऽ–– :||

|| प़प़प़ , प़ऽप़ | सऽऽ , ऽऽग | पऽग , सऽग | पऽऽ , ऽ–– |

| प़प़प़ , प़ऽप़ | सऽऽ , ऽऽग | पऽप़ , पऽप़ | सऽऽ , ऽ–– :||

* इस चरण में 8 गण (16 कदम) की दीर्घ यति छोड़ना है।

शंख **भास्कर** केरवा-१२०

॥ॐ॥	ग	गSSग	|	प	प़	|	स	गSSग	|	स	–	॥
॥	ग	S	|	गSSस	गप	|	प़	प़SSप़	|	प़	S–	|
|	ग	S	|	गSSस	गप	|	स	गपग	|	स	–	:॥
											–प़	॥
॥	स	सSSग	|	प	Sग	|	पSSग	सSSप	|	ग	–प़	|
|	स	सSSग	|	प	–प़	|	स	गपग	|	स	–	:॥
॥	प	सग	|	प	गस	|	प़	सप	|	ग	Sस	|
|	ग	–	|	प	गस	|	प़	सSSग	|	स	–	:॥
॥	सSसस	सग	|	स	Sप़	|	स	सSSस	|	स	–	|
|	गSगग	गस	|	ग	Sप	|	ग	गSSग	|	ग	–	|
|	पSपप	पग	|	प	Sप़	|	स	सSSग	|	स–	–प़	|
|	ग	गSSप	|	ग–	–प़	|	स	SSSस	|	स	–	:॥

शंख   **नीलकंठ**   खेमटा-३६० केरवा-१२०

||ॐ|| प़ऽऽ , सगग | पऽप , पऽ– | सगप , सगप | सऽऽ , ऽ–– ||

–स ||

|| ग ग | गऽगग ग | सगपग सगपग | प –स |

| ग ग | गऽगग ग | सगपग सगपग | स ऽ– :||

|| सग सग | प ऽप | प सग | प– प– |

| सग सग | प ऽप | प सग | स– – :||

––सस ||

|| प गस | प़ सग | पऽऽप पप | प– ––सस |

| प गस | प़ सग | गऽऽग गग | स– – :||

|| गऽग , गऽग | सप़स , गऽग | पऽप , पपप | पऽऽ , ऽ–– |

| गऽग , गऽग | सप़स , गऽग | पऽप , गगग | सऽऽ , ऽ–– :||

|| प़स सग | गप गस | प ऽऽपप | प स– |

| प़स सग | गप गस | प– प़ | स ऽ– :||

|| –ग पग | –स गस | ––प़प़ प़प़ | स गप |

| –ग पग | –स गस | ––प़प़ प़प़ | स– – :||

शंख **निनाद** केरवा-१२०

‖ॐ‖	पग	पग	|	प	प़	|	प	प	|	प–	–	‖
											––सस		‖
‖	सप़	सप़	|	गस	ऽग	|	पग	पग	|	पग	–प़	|
|	प़प़	सग	|	पग	पग	|	पप़	–प़	|	स–	–	:‖
‖	पग	ऽस	|	प़प़	सस	|	सऽप़स	गस	|	प	ऽ–	|
|	पग	ऽस	|	प़प़	सस	|	प़ऽसग	पप़	|	स–	–	:‖
											––प़प़		‖
‖	प़	ऽस	|	गप	गस	|	ग	ऽऽपप	|	प	––प़प़	|
|	प़	ऽस	|	गप	गस	|	प	प़	|	स–	–	:‖
											––प़प़		‖
‖	पऽगग	गऽसस	|	सऽप़स	ग–प़प़	|	पऽगग	गऽसस	|	सग	प़–	|
|	पऽगग	गऽसस	|	सऽप़स	ग–	|	प़ऽसग	पप़	|	स–	–	:‖
‖	ग	ऽऽपग	|	स	ऽऽगस	|	प़	ऽस	|	ग–	सप़	|
|	ग	ऽऽपग	|	सग	–प़	|	सग	पप़	|	स–	–	:‖

शंख | त्रिहुत | केरवा-१२० खेमटा-३६०

‖ॐ‖ स़ प़ऽऽप़ | स गऽऽग | प पऽऽप | प ऽऽसग |

| प पऽऽप | प ऽऽसग | प पऽऽप | प – ‖

‖ पऽप , गऽग | सऽस , प़ऽप़ | स़ऽस़ , प़ऽस | गऽऽ , गऽप |

| पऽप , गऽग | सऽस , प़ऽप़ | सऽस , गऽग | सऽ– , ––– :‖

, ––स ‖

‖ स़ऽप़ , सऽग | पऽग , सऽग | स़ऽप़ , सऽग | पऽप , प–स |

| स़ऽप़ , सऽग | पऽग , सऽग | स़ऽप़ , सऽग | सऽ– , ––– :‖

, –प़स ‖

‖ गऽस , प़प़स | गऽस , प़प़स | गऽग , गऽग | गऽ– , –प़स |

| गऽस , प़प़स | गऽस , प़प़स | प़सग , पगप़ | सऽ– , ––– :‖

‖ 2 ‖

‖ स़ प़ | स ग | प ऽऽपप | पग प– |

| स़ प़ | स ग | पऽपप प़प़ | स– – :‖

*‖ स़प़स़ऽ प़ | प़सप़ऽ स | गगगग प़सगऽ | प स्प़ |

| स़प़स़ऽ प़ | प़सप़ऽ स | गगगऽ प़सगऽ | १ स – :‖

| २ स ––सग | प ग | स ग | स ऽऽसस |

* यह पूरा चरण दूसरा क्रमभेद (२) के साथ केवल अनुवादकों को बजाना चाहिए। | स– – ‖

शंख **वसंत** खेमटा-३६०

॥ॐ॥ पऽग ,सऽग | पऽग ,सऽग | प़ऽऽ ,सऽग | सऽऽ , --- ॥

॥ सऽग ,पऽऽ | सऽग ,पऽग | पऽस ,पऽप़ | सऽप , गऽऽ |

| सऽग ,पऽऽ | सऽग ,पऽग | पऽप़ ,सऽऽ | सऽस , स--:॥

, --प़ ॥

॥ गऽऽ ,पऽप | गऽऽ ,--प़ | सऽप ,गऽस | गऽऽ , --प |

| गऽऽ ,पऽप | गऽऽ ,--प़ | सऽऽ ,गपग | सऽऽ , ---:॥

, --प़ ॥

॥ सऽस ,सऽग | प़ऽप़ ,प़ऽ- | पऽग ,सऽऽ | प़सग , पऽ- |

| सऽस ,सऽग | प़ऽप़ ,प़ऽ- | सऽऽ ,सऽग | सऽऽ , ---:॥

॥ प़सग ,पगस | पऽऽ ,--ग | पगस ,प़ऽप | गऽऽ , ऽऽस |

| गऽऽ ,ऽ-- | प़सग ,पऽप | पगस ,गऽग | गसप़ , सऽस |

| सऽग ,पऽऽ | पगस ,गऽग | पगस ,प़ऽप़ | सऽऽ , ---:॥

॥ गऽस ,प़ऽस | गऽस ,पऽग | सऽप ,गऽस | पऽग , पऽ- |

| पऽग ,सऽप | गऽस ,गऽ- | गऽस ,प़ऽस | गऽस , प़ऽस |

| गऽप ,सऽग | प़ऽप़ ,प़ऽ- | पऽप ,पऽग | सऽग , प़ऽ- |

| गऽग ,गऽप़ | सऽस ,गऽ- | पऽग ,पऽप़ | सऽऽ , ---:॥

शंख **प्रताप** खेमटा-३६०

‖ॐ‖ गपग , सडग | गपग , सडग | पृडड , डसग | पडड , डगस |
| पृडड , डसग | पडड , ड−− | पपप , पपप | पड− , −−− ‖
‖ पपड , गसड | ड−स , गपग | पपड , गसड | ड−प , गसड |
| पृसड , सगड | ड−ग , सगस | पृसड , सगड | सडड , ड−− ः‖
‖ सडड , डसग | सडस , गडग | पडड , डगस | गडग , पड− |
| गपड , गपड | सगड , सगड | पपड , गसड | पृपृपृ , सड− ः‖
‖ गपग , गपग | सगस , सगस | पृपृड , सगड | पड− , पड− |
| −−प , पपड | −−ग , गगड | पृपृपृ , सगड | सड− , −−− ः‖

शंख — **पाञ्चजन्य** — केरवा-१२०

‖ॐ‖	स़	ऽप़	|	स	ग	|	प–	प़	|	स	ऽ–	‖
‖	स़स़	ऽस़	|	प़स	गस	|	गऽगग	गप	|	ग	ऽप	|
|	स़स़	ऽस़	|	प़स	गस	|	गऽगग	सग	|	स	–	:‖
‖	प़	ऽऽप़प़	|	प़स	ग–	|	प़स	ऽग	|	सग	स–	|
|	प़	ऽऽप़प़	|	प़स	ग–	|	प़स	सग	|	स	ऽ–	:‖
‖	ससऽस	सस	|	गगगग	गग	|	सऽसग	पग	|	–स	–स	|
|	ससऽस	सस	|	गगगग	गग	|	प़ऽप़प़	सग	|	स	ऽ–	:‖
‖	गऽऽग	गग	|	पग	गस	|	गऽऽग	गग	|	सग	प–	|
|	गऽऽग	गग	|	पग	गस	|	गऽऽग	गग	|	स	ऽ–	:‖
‖	पप	पगि	|	गग	गसि	|	पप	पप	|	सऽसग	प–	|
|	पप	पगि	|	गग	गसि	|	प–	प़ऽऽप़	|	स–	–	:‖

शंख

कावेरी

दादरा-१२०

‖ॐ‖ प़ स ग | प ग स | प पप प | प स स– |
| प ग स | प़ स ग | प़ प़प़ प़ | प़ स स– :‖
‖ स प़ स | ग गग ग– | प ग स | प पप प– |
| पप पप प– | गग गग ग– | प़ प़ प़ | स स स– :‖

शंख

निरंजन

दादरा-१२०

‖ॐ‖ ग स प | स स ग | प़ प़ प़ | स सग प |
| ग स प | स स ग | – – – | – – – |
| ग स प | स स ग | प़ प़ प़ | स सग प |
| ग स प | स स ग | प़ प़ प़ | स – – :‖
‖ प़ स ग | प स प | प ग स | प़ स प़ |
| प़ स ग | प स प | प़ प़प़ प़ | स – – :‖
‖ प़ प़ प़ | स स स | – – – | – – – |
| स स स | ग ग ग | – – – | – – – |
| ग ग ग | प प प | – – – | – – – |
| प ग स | प़ प़ प़ | स ग प | स स– – :‖

शंख **वरदा** दादरा-१२०

॥ॐ॥	स	ऽ	स	प़	ऽ	प़	ग	ऽ	ग	स	ऽ	–	।
।	ग	ऽ	ग	प	ऽ	ग	स	ऽ	प़	स	ऽ	–	:॥
॥	ग	गप	सग	प़	ऽ	प़	स	सग	प़स	ग	ऽ	ग	।
।	ग	गप	ग	स	सग	स	प़	प़	प़	स	ऽ	–	:॥
॥	प	ऽ	गस	प़	ऽ	प़	ग	ऽ	सग	स	ऽ	–	।
।	सग	गप	गस	प	सग	प	प़	प़	प़	स	ऽ	–	:॥

शंख **मलयप्रभा** दादरा-१८०

॥ॐ॥	स	ऽ	ग	स	ऽ	ऽ–	प	ऽ	ग	स	सग	प	।
।	प़	प़	प़	स	ऽ	ग	प़	–	प़	स	ऽ	ऽ–	:॥
॥	ग	प	सग	प	ऽ	ऽ–	प	प	प	प	ऽ	प	।
।	ग	प	सग	प	ऽ	ऽ–	प़	प़	प़प़	स	ऽ	ऽ–	:॥
॥	पग	सप़	सग	प	–	–	प	ऽ	सग	प	–	–	।
।	पग	सप़	सग	प	–	–	प़	सग	पग	स	ऽ	ऽ–	:॥

शंख | दत्तात्रेय | दादरा-१२०

||ॐ|| | – – स ||

|| प़ ऽ प़ | ग ऽ ग | प – – | प सग प |

| प़ ऽ प़ | ग ऽ ग | प प प | प – स |

| प़ ऽ प़ | ग ऽ ग | प – – | प सग प |

| प़ ऽ प़ | ग ऽ ग | स ऽ ऽ | ऽ – – :||

| – – प़ ||

|| स ऽ ऽ | ग स प़ | स़ ऽ स़ | स़ ऽ प़ |

| स ऽ ऽ | ग स प़ | स ऽ ग | प – प़ |

| स ऽ ऽ | ग स प़ | स़ ऽ स़ | स़ – प़ |

| स – प़ | ग – प़ | स – स | स – – :||

शंख **स्वागतप्रणाम** रूपक-१२०

‖ॐ‖ स s पृ , सग पृस , गप सग |
| प s – , प गस , पृ सग |
| स s पृ , सग पृस , गप सग |
| प s – , प पप , ग गग |
| स s ग , पृ सग , प पृ ‖ स s – ‖

शंख **ध्वजप्रणाम** केरवा-१२०

‖ॐ‖ पृ ‖
‖ पsपप गsगग | sssस पृsपृपृ | सृ पृपृ | स –स |
| पृsपृपृ sssग | स –स | पृsपृपृ sssग | स – ‖

शंख **प्रत्युत्प्रचलनम्** केरवा-१२०

‖ॐ‖ पग ग | गस स | पृsपृपृ पृपृ | स ग |
| पग ग | गस स | पृsपृपृ पृपृ | स– – ‖

शंख **आद्यसरसंघचालकप्रणाम** झपताल-२४०

॥ॐ॥	प़ऽ , सगस	प़ऽ , सऽस	प़ऽ , सगस	प़ऽ , गऽग	।
।	पऽ , पगप	पऽ , ऽऽ–	गऽ , गसग	गऽ , ऽऽ–	।
।	प़ऽ , सगस	प़ऽ , सऽस	प़ऽ , सगस	प़ऽ , गऽग	।
।	पपप , पगस	गगग , गसप़	सऽ , गपग	सऽ , ऽऽ–	॥

शंख **सरसंघचालकप्रणाम** केरवा-१२०

				प़	॥
॥ॐ॥	स प़ऽऽस	ग सऽऽग	प गऽऽस	गप गस	।
।	प़ सऽस	गऽग गसग	प पऽऽप	प प़	।
।	स प़ऽऽस	ग सऽऽग	प गऽऽस	गप गस	।
।	प़ सऽऽग	प– प़	स ससस	स –	॥

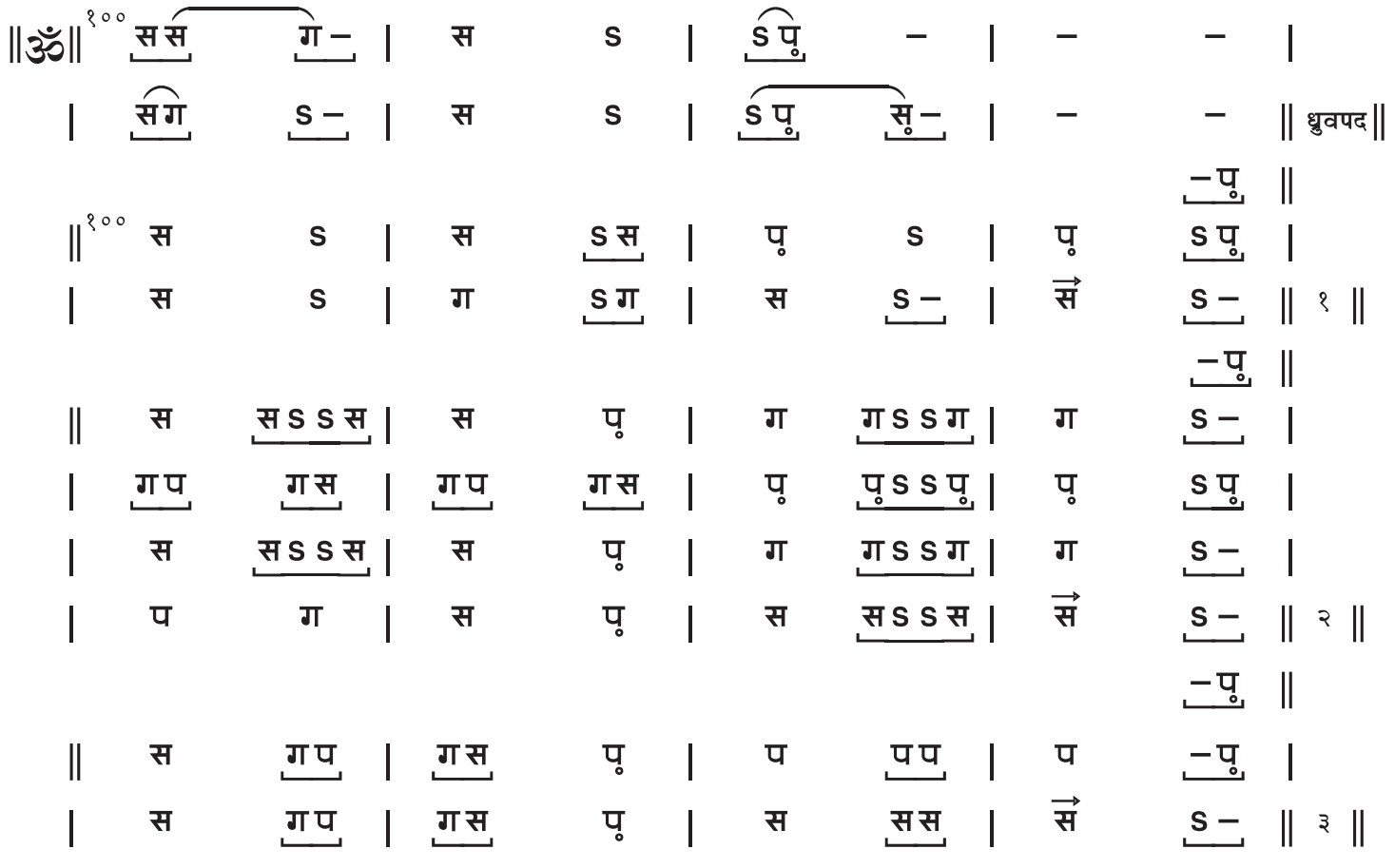

शंख　　　　**प्रबोधन**　　　　केरवा-१२०

‖ॐ‖ [१००] सस ग– | स ऽ | ऽप़ – | – – |
| सग ऽ– | स ऽ | ऽप़ स़– | – – ‖ ध्रुवपद ‖

–प़ ‖
‖ [१००] स ऽ | स ऽस | प़ ऽ | प़ ऽप़ |
| स ऽ | ग ऽग | स ऽ– | स⃗ ऽ– ‖ १ ‖

–प़ ‖
‖ स सऽऽस | स प़ | ग गऽऽग | ग ऽ– |
| गप गस | गप गस | प़ प़ऽऽप़ | प़ ऽप़ |
| स सऽऽस | स प़ | ग गऽऽग | ग ऽ– |
| प ग | स प़ | स सऽऽस | स⃗ ऽ– ‖ २ ‖

–प़ ‖
‖ स गप | गस प़ | प पप | प –प़ |
| स गप | गस प़ | स सस | स⃗ ऽ– ‖ ३ ‖

शंख **संघोष** खेमटा- ३६०

‖ॐ‖ – – – , – – प़ | स ऽ स , ग ऽ ग | ग स ग , प⃗ ऽ ऽ ‖

शंख **शारीरिक सूचना** केरवा- १२०

‖ॐ‖ प़ ऽ ऽ स प़ – | स ऽ ऽ ग स स | ग ऽ ऽ प ग – | स ग प – |

| ग ऽ ऽ प ग – | स ऽ ऽ ग स स | प़ ऽ ऽ स प़ – | स स स – :‖

शंख **बौद्धिक सूचना** खेमटा - ३६०

‖ॐ‖ | , – – प़ ‖

‖ प ऽ प , ग ऽ ग | स ऽ स , प़ ऽ प़ | प़ प़ प़ , स ऽ स | ग ऽ ग , स ऽ ऽ |

| ऽ ऽ ऽ , ऽ – – | प़ ऽ प़ , स ऽ स | ग ऽ ग , स⃗ ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ , ऽ – – ‖

शंख कार्यक्रम प्रारंभ ‖ॐ‖ स ग स , ग ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ , ऽ – – :‖ खेमटा - ३६०

शंख परिवर्तन ‖ॐ‖ >स⃗ ऽ :‖ केरवा - १२०

शंख कार्यक्रम समाप्ति ‖ॐ‖ स ग प | स⃗ ऽ – :‖ दादरा - १२०

शंख **भोजन सूचना** **केरवा-१६०**

||ॐ|| स स | स स | प़ प़प़ | स ऽ– |

| प़स प़ | सग स | सग पग | स ऽ– |

| स स | स स | प़ प़प़ | स ऽ– |

| सग प़स | गप सग | पग पग | स स |

| स स | स स | प़ प़प़ | स→ ऽ– ||

शंख **जागरण** **केरवा-१२०**

||ॐ|| प़ ऽस | गस गस | प़ ग | ऽ ऽ– |

| स ऽग | पग पग | स प | ऽ ऽ– |

| पऽपप प– | गऽगग ग– | सऽसस स– | प़ऽप़प़ प़– ||

|| प़ऽसस प़स | –स –स | सग ऽस | गग प– |

| गऽगग पग | –ग –ग | गस ऽग | सस प़– :||

|| प़ ऽ | स ऽ | ग ऽ | >प→ ऽ ||

शंख **दीपनिर्वाण सूचना** झपताल-१२०

||ॐ|| पग पग , प ग ग | गस गस , ग स स |

| प़ऽप़प़ प़प़ , स ग प | गऽगग गग , स ऽ ऽ– ||

|| प़ स , ग सग स– | स ग , प गप ग– |

| सग पग , सग पग स– | प़ऽप़प़ प़प़ , स ऽ ऽ– ||

|| प़ऽप़प़ प़स , प़स प़स ग– | सऽसस सग , सग सग प– |

| पऽपप गप , गप गस स– | प़ऽप़प़ प़प़ , स ग प |

| प़ऽप़प़ प़प़ , स ऽ ऽ– ||१०० स़ स़ , स़प़ ऽ ऽ |

| स़ स़ , स़प़ ऽ ऽ | स़ स़ , स़प़ ग स ||

शंख **दीपनिर्वाण** दादरा-१२०

||ॐ|| स ऽ ऽ | स ऽ प़ | स ऽ प़ | स ऽ ऽ |

| गस ऽ ऽ | ऽ – – ||

शंख **संकट सूचना** केरवा-१२०

‖ॐ‖	प़प़प़–	ससस–	गसगस	ग	ससस–	गगग–	पगपग	स ‖
‖	प़सगस	प़सगस	गपऽऽ	ऽ–	प़सगस	प़सगस	गपऽऽ	ऽ– :‖

शंख **ध्वजावतरणम्** केरवा-१००

				‖ॐ‖	स	ऽ	ऽ–	– ‖
‖	ग	पग	स	ऽप़	सऽगस	गस	प़	ऽ– |
|	गप	सग	प़स	ग	प	ग	स	ऽ– |
|	ग	पग	स	ऽप़	सऽगस	गस	प़–	स– |
|	पऽऽग	सप़	स	पग	सप़	स	प	ग ‖
‖	स	–प़	स	सस	प़	प़	प़	ऽ– |
|	ग	प	स	ग	प़स	ऽग	प	ऽ– |
|	स	–प़	स	सस	प़	प़	प़	ऽ– |
|	गग	प	सस	ग	प़स	–	स	ऽ– ‖